सूरह — एक कहानी

सूरह अल-क़लम

क़लम

पूरा सफ़र — क़लम, किरदार, और ग़ायब हुआ बाग़ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 68 • 52 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

नून, वल्-क़लमि व मा यस्तुरून
1. नून। क़सम है क़लम की और उस की जो वो लिखते हैं।

व इन्नक ल-'अला ख़ुलुक़िन 'अज़ीम
4. और बेशक आप अज़ीम अख़लाक़ पर हैं।

फ़-ला तुति'इल्-मुकज़्ज़िबीन
8. तो झुठलाने वालों की बात मत मानिए।

इन्ना बलौनाहुम कमा बलौना अस्हाबल्-जन्नह
17. बेशक हमने उन्हें आज़माया जैसे बाग़ वालों को आज़माया था।

क़ाल औसतुहुम अलम अकुल्-लकुम लौला तुसब्बिहून
28. उन में से बेहतर शख़्स ने कहा: क्या मैंने तुमसे न कहा कि तस्बीह क्यों नहीं करते?

फ़स्बिर लि-हुक्मि रब्बिक व ला तकुन क-साहिबिल्-हूत
48. तो अपने रब के फ़ैसले के लिए सब्र करो, और मछली वाले की तरह मत हो।

क़लम की क़सम

बेटा, यह सूरह एक वाहिद अरबी हर्फ़ से शुरू होती है — 'नून' — उन शुरुआत में से एक जिनके पूरे माने अल्लाह ने अपने पास रखे, और जिनका पहला सबक़ आजिज़ी है।

और फिर अल्लाह एक क़सम खाते हैं — और देखिए वो किस चीज़ की क़सम चुनते हैं: 'वल्-क़लमि व मा यस्तुरून — क़सम है **क़लम** की, और उस की जो वो लिखते हैं।'

बेटा, क़लम पर रखी हुई इज़्ज़त महसूस कीजिए। ये एक अन-पढ़ रसूल ﷺ पर नाज़िल हुई, एक ऐसे शहर में जहाँ तक़रीबन कोई पढ़ नहीं सकता था, एक ऐसी तहज़ीब में जहाँ हर चीज़ तलवार तय करती थी। और अल्लाह आजिज़ से नज़र आने वाले क़लम की क़सम खाते हैं — इल्म, रिकॉर्ड और तहज़ीब का औज़ार।

और उलमा ज़िक्र करते हैं कि जो कुछ लिखा जाता है उस में फ़रिश्तों की तहरीर भी है,

और वो क़लम भी जिसने तक़दीर लिखी। तो ये क़सम ऊपर लौह-ए-महफ़ूज़ से ले कर नीचे एक तालिब-ए-इल्म की कॉपी की स्याही तक, सब को समेट लेती है। बेटा, **आप जो भी लिखें वो ग़ैर-जानिबदार नहीं होता** — एक क़लम या तो बनाता है या तबाह करता है।

अब तक का सबसे बड़ा सनद

ये अज़ीम क़सम क्यों? उस ज़ुल्म की वजह से जो इसके बाद आया। जब मक्का के सरदार पैग़ाम का जवाब न दे सके, तो उन्होंने पैग़ंबर पर हमला किया — मुसाफ़िरों और हाजियों के कानों में ये सरगोशी कर के: 'ये मजनून है, आसैब-ज़दा।' ये ज़मीन का सबसे पुराना हथकंडा है, बेटा: जब आप दलील न तोड़ सकें, तो उस शख़्स की साख़ तोड़ दो जो उसे उठाए हुए है।

और क़लम की उस क़सम पर, अल्लाह ने जवाब दिया: 'मा अन्त बि-नि'अ्मति रब्बिक बि-मज्नून — आप अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हैं। व इन्न लक ल-अज्रन ग़ैर ममनून — और बेशक आपके लिए वो अज्र है जो न ख़त्म होने वाला है, और जिस पर कोई एहसान नहीं जताया जाएगा।'

और फिर, बेटा, चार लफ़्ज़ आए जो तारीख़ में किसी इंसान को दिए गए हर मेडल, लक़ब और इज़्ज़त से भारी हैं: 'व इन्नक ल-'अला ख़ुलुक़िन 'अज़ीम — **और बेशक आप अज़ीम अख़लाक़ पर हैं।**'

सोचिए कौन बोल रहा है, बेटा। कोई दोस्त किसी दोस्त की तारीफ़ नहीं कर रहा। आसमानों और ज़मीन के ख़ालिक़, जिनका कलाम ख़ुद सच है, एक शख़्स के **अख़लाक़** की तस्दीक़ कर रहे हैं — और उस सनद को एक ऐसी किताब में महफ़ूज़ कर रहे हैं जो क़यामत तक पढ़ी जाएगी।

और जब हमारी माँ आइशा (रज़ि0) से उनके अख़लाक़ का बयान पूछा गया, तो उन्होंने तारीख़ का सबसे मुकम्मल जवाब दिया: 'कान ख़ुलुक़ुहुल्-क़ुरआन' — **उनका अख़लाक़ क़ुरआन था।** बेटा, समझिए इसका मतलब: ये किताब, चलती हुई। इसमें हर हुक्म — रहमत, सचाई, सब्र, सख़ावत, आजिज़ी — एक ज़िंदगी में नज़र

आता था।

और उस अंदर छुपे सबक़ को देखिए, बेटा: तोहमत का जवाब **किरदार** से दिया गया, ग़ुस्से से नहीं। अल्लाह ने बढ़ाया: 'फिर अनक़रीब आप देख लेंगे, और वो भी देख लेंगे, कि तुम में आज़माइश-ज़दा कौन है।' वक़्त और अख़लाक़ मिल कर हर मज़ाक़ उड़ाने वाले को ख़ामोश कर देते हैं। चौदह सदियों बाद, हम देख रहे हैं।

दस ऐबों वाले शख़्स की बात मत मानो

फिर अल्लाह अपने रसूल ﷺ — और उनके बाद हर मोमिन — को समझौते के बारे में एक हुक्म देते हैं: 'फ़-ला तुति'इल्-मुकज़्ज़िबीन — तो झुठलाने वालों की बात मत मानो। वद्दू लौ तुद्दिहनु फ़-युद्दिहनून — वो चाहते हैं कि आप **नरम पड़ जाएँ**, ताकि वो भी नरम पड़ जाएँ।'

बेटा, 'तुद्दिहन' का मतलब है लचकदार हो जाना, थोड़ा दे देना, लकीर को धुँधला कर देना ताकि सब आराम में रहें। इसी तरह अक्सर सच खोया जाता है — किसी अचानक हथियार डालने से नहीं, बल्कि एक धीमे नरम पड़ जाने से, अमन क़ायम रखने के लिए एक छोटे समझौते से।

और फिर उस शख़्स की **दस ख़ूबियाँ** जिसकी बात नहीं मानी जानी — इन्हें एक आईने की तरह पढ़िए, बेटा: 'और उस हर हक़ीर, कसरत से **क़समें खाने वाले** की बात मत मानो' — जो छोटी छोटी बातों पर बार बार अल्लाह की क़सम खाए, क्योंकि उसकी अकेली बात का कोई वज़न ही नहीं; 'एक **ताने देने वाले** की' — जो लोगों का मज़ाक़ उड़ाए और उन्हें छोटा करे; '**चुग़ली** खाते फिरने वाले की' — जो बातें घर घर ले जा कर ताल्लुक़ात तोड़े; '**भलाई को रोकने वाले** की'; 'हद से बढ़ने वाले, गुनहगार; **संग-दिल** — और उस पर **बद-असल** भी।'

बेटा, फ़ेहरिस्त ग़ौर से देखिए: क़समें, मज़ाक़, चुग़ली, भलाई रोकना, सख़्ती। इन में से एक भी ऐसा जुर्म नहीं जिसकी सज़ा कोई अदालत दे — ये सब **ज़ुबान और मिज़ाज** की बीमारियाँ हैं। और अल्लाह इन्हें एक ऐसे शख़्स की निशानियाँ क़रार देते हैं जिसकी राय आपको हिलाना नहीं चाहिए।

वो ऐसा क्यों था? 'इसलिए कि वो माल और औलाद वाला था' — तकब्बुर अक्सर सिर्फ़ पैसा और मर्तबा है बग़ैर शुक्र के। और उसका अंजाम: 'हम उसे सूँड (नाक) पर दाग़ देंगे।' उसी चेहरे पर एक ज़लील करने वाला निशान जिस से वो तंज़ करता था।

वो बाग़ जो एक रात में ग़ायब हो गया

और अब, बेटा, सूरह एक ऐसी कहानी सुनाती है जो हर कमाने वाले, ताजिर और तनख़्वाह-दार को साल में एक बार ज़रूर सुननी चाहिए — **बाग़ वालों** की कहानी।

एक नेक आदमी था जिसके पास एक उम्दा बाग़ था। हर फ़सल पर, वो वो करता जिसपर उसके शहर के ग़रीब इनहिसार करने लगे थे: वो उन्हें बुलाता, और उन्हें उनका हिस्सा सख़ावत से देता। जब वो फ़ौत हुआ, तो उसके बेटों ने बाग़ विरासत में पाया — और बैठ कर हिसाब-किताब करने लगे। उनका नतीजा: बाप का सदक़ा मुनाफ़े में एक छेद था।

तो उन्होंने क़सम खाई: 'ला यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन — हम इसे ज़रूर सुबह-सवेरे काट लेंगे' — फ़ज्र से पहले, ख़ामोशी से, ताकि ग़रीबों को पता न चले — 'व ला यस्तस्नून — और उन्होंने कोई इस्तिस्ना न किया।' बेटा, इस जुमले का मतलब है कि उन्होंने **'इन शा अल्लाह' न कहा।** उन्होंने मुस्तक़बिल का मंसूबा यूँ बनाया जैसे वो उनके हाथ में एक मिल्कियत हो।

'फ़-ताफ़ 'अलैहा ताइफ़ुम्-मिर्-रब्बिक व हुम नाइमून — फिर आपके रब की तरफ़ से एक आने वाला (आफ़त) उस पर फिर गया जब कि वो सो रहे थे।' जब वो अपने होशियार मंसूबे के ख़्वाब देख रहे थे, फ़ैसला ऊपर पहले ही हो चुका था। 'फ़-अस्बहत कस्-सरीम' — और सुबह तक वो ऐसे खेत जैसा हो गया जो पहले ही काट लिया गया हो — काला, उजड़ा, ख़त्म।

फ़ज्र के वक़्त वो निकले, एक दूसरे से सरगोशी करते हुए ताकि कोई न सुने: 'अन ला यद्ख़ुलन्नहल्-यौम 'अलैकुम मिस्कीन — आज कोई ग़रीब तुम पर इसमें न आ जाए!' — 'और वो सवेरे निकले, पक्के इरादे के साथ, अपने आप को क़ादिर समझते

हुए।'

और जब उन्होंने उसे देखा, उन्होंने कहा: 'हम ज़रूर रास्ता भूल गए! नहीं — बल्कि **हम महरूम कर दिए गए**।'

और फिर, बेटा, वो जुमला जो हर गिरते हुए गिरोह में एक आवाज़ की तरह गूँजता है: 'क़ाल औसतुहुम अलम अक़ुल्-लकुम लौला तुसब्बिहून — उन में से **बेहतर/मो'तदिल** शख़्स ने कहा: क्या मैंने तुमसे न कहा था — तुम **तस्बीह क्यों नहीं करते**?'

बेटा, ग़ौर कीजिए उसने उनकी कमी किस चीज़ में बताई: तदबीर में नहीं, हिसाब में नहीं — **तस्बीह** में। अल्लाह को याद करने में, ये मानने में कि बाग़ उनका था। और गौर कीजिए वो ये पहले भी कह चुका था और उन्होंने न सुना।

फिर उन्होंने कहा: 'सुब्हान रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन — हमारा रब पाक है; बेशक हम ही ज़ालिम थे।' और वो एक दूसरे को मलामत करने लगे। और आख़िर में: 'अ'सा रब्बुना अंय्-युब्दिलना ख़ैरम्-मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून — उम्मीद है हमारा रब हमें इससे बेहतर बदल दे; बेशक हम अपने रब ही की तरफ़ रग़बत रखते हैं।'

और फिर सबक़: 'कज़ालिकल्-'अज़ाब — अज़ाब ऐसा ही होता है। व ल-'अज़ाबुल्-आख़िरति अक्बर — और आख़िरत का अज़ाब तो और बड़ा है — लौ कानू य'अ्लमून — काश वो जानते।'

वो दिन जब पिंडली खोली जाएगी

फिर सूरह एक सादा इंसाफ़ के सवाल के साथ मुड़ती है: 'अ फ़-नज्'अलुल्-मुस्लिमीन कल्-मुज्रिमीन — क्या हम फ़रमाँबरदारों को मुजरिमों जैसा कर दें? मा लकुम, कैफ़ तह्कुमून — तुम्हें क्या हो गया? तुम कैसे फ़ैसला करते हो?'

बेटा, यही आख़िरत की अख़लाक़ी दलील है। अगर ईमानदार और बद-ईमान दोनों क़ब्र में एक जैसे ख़त्म हो जाएँ, तो इंसाफ़ एक मज़ाक़ है और कायनात बे-मानी। हर

वो इंसानी दिल जिसने कभी चीख़ कर कहा 'ये इंसाफ़ नहीं!' गवाही दे रहा है कि एक फ़ैसले का दिन लाज़मी मौजूद है।

और फिर एक मंज़र: 'यौम युक्शफ़ु 'अन साक़िंव्-व युद्'औन इलस्-सुजूदि फ़-ला यस्ततीअून — उस दिन पिंडली खोली जाएगी और उन्हें सजदे के लिए बुलाया जाएगा, मगर वो न कर सकेंगे। उनकी आँखें झुकी हुई, ज़िल्लत उन्हें ढाँपे हुए — और वो (दुनिया में) सजदे के लिए बुलाए जाते थे जब कि वो सेहतमंद थे।'

बेटा, उस ख़ौफ़ के अंदर छुपी रहमत समझिए। **सजदा करने की सलाहियत कोई दाइमी इजाज़त नहीं** — ये एक तोहफ़ा है, अभी दस्तयाब, जब तक आपकी पीठ झुकती है और आपकी पेशानी ज़मीन तक पहुँचती है। एक ऐसा दिन आएगा जब दावत दी जाएगी और जिस्म इताअत नहीं करेगा। तो हर सजदा जो आप आज कर सकते हैं एक ऐसा मौक़ा है जो एक दिन छीन लिया जाएगा।

सब्र करो — मगर मछली वाले की तरह नहीं

जैसे सूरह ख़त्म होती है, अल्लाह अपने रसूल ﷺ को तसल्ली देते हैं: 'तो मुझे और उस शख़्स को छोड़ दो जो इस बात को झुठलाता है — सनस्तद्रिजुहुम मिन हैसु ला य'अ्लमून — हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता, वहाँ से ले चलेंगे जहाँ से उन्हें इल्म भी न होगा।'

बेटा, **'इस्तिद्राज'** क़ुरआन के सबसे होला देने वाले मफ़ाहीम में से एक है: एक शख़्स ना-फ़रमानी करता है, और मुश्किल के बजाय ने'मतें **बढ़** जाती हैं — और वो समझता है कि अल्लाह उस से ख़ुश हैं, जब कि उसे क़दम ब क़दम अपनी तबाही के क़रीब खींचा जा रहा होता है। तो अल्लाह की रज़ामंदी को कभी सिर्फ़ आराम से मत नापिए। मोमिन उसे **इताअत की सलाहियत** से नापता है।

और फिर नबी ﷺ को आख़िरी हिदायत: 'फ़स्बिर लि-हुक्मि रब्बिक — तो अपने रब के फ़ैसले के लिए सब्र करो — व ला तकुन क-साहिबिल्-हूत — और मछली वाले की तरह मत हो — जब उसने ग़म से घुटे हुए पुकारा।'

मछली वाले से मुराद यूनुस (अलैहि0) हैं — अल्लाह के एक बुज़ुर्ग नबी, जिनकी कहानी की हम ता'ज़ीम करते हैं। और ये आयत उनकी तौहीन नहीं; ये एक लम्हे से लिया गया सबक़ है: उन्होंने अपनी क़ौम को अपने रब की इजाज़त आने से पहले झुँझलाहट में छोड़ दिया। और उन्हें किस चीज़ ने बचाया? वही दुआ: 'ला इलाह इल्ला अन्त, सुब्हानक, इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन।' अगली आयत तस्दीक़ करती है: 'मगर उनके रब ने उन्हें **चुन** लिया और उन्हें नेकों में बना दिया।'

बेटा, ये सबक़ हर उस शख़्स के लिए क़ीमती है जो कोई नेक काम कर रहा हो और ना-शुक्रे लोगों से थक रहा हो: **अपने रब के फ़ैसले से पहले छोड़ कर मत जाइए।** सब्र बे-अमल नहीं है — ये अपनी चौकी पर तब तक डटे रहना है जब तक हुक्म न आ जाए।

और फिर सूरह का आख़िरी तोहफ़ा: 'व इंय्-यकादुल्-लज़ीन कफ़रू ल-युज़्लिक़ूनक बि-अब्सारिहिम लम्मा समि'उज़्-ज़िक्र — और बेशक जो मुनकिर हैं वो तक़रीबन आपको अपनी **नज़रों** से फिसला ही देते जब वो नसीहत सुनते हैं। व मा हुव इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-'आलमीन — हालाँकि ये **जहानों के लिए एक नसीहत** के सिवा कुछ नहीं।'

उलमा इस आयत का ज़िक्र नज़र-ए-बद की हक़ीक़त के साथ करते हैं। और वो आख़िरी बात देखिए, बेटा: इस सारे मज़ाक़ के बाद, सूरह ये एलान कर के ख़त्म होती है कि क़ुरआन असल में **है** क्या — 'जहानों के लिए एक नसीहत।' उन्होंने उसे जुनून कहा; अल्लाह ने उसे सारी इंसानियत के लिए रहमत कहा। तारीख़ ने लिख दिया कि कौन सा बयान सही था।

इस सूरह से क्या सीखा

1. क़लम की इज़्ज़त कीजिए — आप जो भी लिखें वो ग़ैर-जानिबदार नहीं; या तो बनाता है या तबाह करता है।

2. किरदार मोमिन का सबसे भारी असासा है: अल्लाह का अपना सनद अख़लाक़ को मिला, और 'उनका अख़लाक़ क़ुरआन था।'

3. तोहमत का जवाब किरदार और सब्र से दीजिए, कभी ग़ुस्से से नहीं।

4. धीमे नरम पड़ जाने से बचिए: सच अक्सर छोटे समझौतों से खोता है, अचानक हथियार डालने से नहीं।

5. उन दस ऐबों पर अपना हिसाब लीजिए — क़समें, मज़ाक़, चुग़ली, भलाई रोकना, सख़्ती — ये ज़ुबान और मिज़ाज की बीमारियाँ हैं।

6. 'इन शा अल्लाह' कहिए, और अपने माल से ग़रीबों को कभी **काट कर** मंसूबा मत बनाइए — बरकत उनके साथ जाती है, और एक रात बाग़ बदलने के लिए काफ़ी है।

7. अपने रब के फ़ैसले से पहले अपनी चौकी मत छोड़िए — और हर सजदे को संजीदा समझिए जो आप अभी कर सकते हैं।

या अल्लाह, हमारे किरदार को अपनी किताब से सँवार दीजिए, हमारे माल में अपने ग़रीबों का हिस्सा महफ़ूज़ रखिए, और हमें आपका फ़ैसला आने तक सब्र अता फ़रमाइए। आमीन।